UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

बोद्धधर्म का वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव एवं सार्थकता

डॉ0 मुनेन्द्र कुमार, प्राचार्य शिक्षा विभाग
किशन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर ऐजुकेशन, मेरठ
(चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ) उत्तर प्रदेश ।
ई–मेल drmunendra2013@gmail.com

सारांश

बौद्धधर्म के शैक्षिक विचार वर्तमान संदर्भ में पूर्णतः प्रासंगिक है। गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बोद्धधर्म सम्पूर्ण मनुष्य जाति के कल्याण के लिए है। बुद्ध ने ज्ञानप्राप्ति के बाद जिस प्रकार संसार के दुखों को पहचाना और दुःखों से छुटकारा पाने का जो मार्ग सुझाया वह बौद्ध धर्म की एक अद्वितीय उपलब्धि थी। बताए गये मार्ग का अनुसरण कर यह सम्पूर्ण मानव समाज जो दुःखों से त्रस्त है, उनसे छुटकारा पर सकता है। वेदों की वर्णव्यवस्था के संदर्भ में बुद्ध कहते है कि केवल ब्राह्मण ही स्वर्ग में सुख भोग के सुयोग्य पात्र नही होते, वरन् पुण्य कर्मो द्वारा क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र भी स्वर्ग के अधिकारी हो सकते है। वर्ण व्यवस्था एवं छुआछूत को कम करने में बौद्ध धर्म बहुत सहायक सिद्ध हुआ है। उपर्युक्त बौद्ध धर्म के क्रान्तिकारी विचारों के परिणामस्वरूप आज की शिक्षा व्यवस्था में जनशिक्षा का प्रदुर्भाव हुआ है। अतः बौद्धधर्म के जनशिक्षा सम्बन्धी विचार आज के संदर्भ में पूर्णतः प्रासंगिक है।

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

मुख्य शब्दः—बौद्धधर्म के शैक्षिक विचार, जन शिक्षा आधुनिक शिक्षा प्रणाली।

प्रस्तावनाः—

शिक्षा विकास की प्रक्रिया है यह अपने व्यापक अर्थ में हरर क्षण और हर स्थान पर चलती रहती है। इसके अनेक रूप है। शिक्षा ही ऐसा साधन है जो मनुष्य को अपना अस्तित्व कायम रखने में सर्वोत्कृष्ट योगदान करती है। इसके व्यक्ति समाज और राष्ट्र सभी का विकास होता है। अतः इसके कार्यों की सीमा में बांधा नहीं जा सकता। शिक्षा मनुष्य के भूत वर्तमान और भविष्य तीनों से सम्बन्ध रखती है। क्योकि यह हमें भूत से परिचित कराती है, वर्तमान में जीने योग्य बनाती है तथा भविष्य मे निर्माण के लिए आधार प्रदान करती है। दार्शनिकों के अनुसार यह मनुष्य को अपने जीवन के अद्देश्यों को प्राप्त करने के योग्य बनाती है।

धर्म और दर्शन का शिक्षा से घनिष्ट सम्बन्ध है। प्राचीन काल में विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिकों एवं विद्वानों ने काल व परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा व्यावस्था के स्वरूप की कल्पना की है। जिसमें अरस्तू, प्लेटों, महर्षि कणाद, कपिल मुनि, महर्षि गौतम, महावीर स्वामी, पतंजलि तथा गौतम बुद्ध इत्यादि लोगों का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है।

समय समय पर धर्म के अनुरूप परिवर्तित होना प्राचीन भारतीय सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता रही है। प्राचीन काल में सभ्यता को बनाने तथा इसमें परिवर्तन लाने में

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

राजनैतिक, आर्थिक यास सामाजिक कारकों की अपेक्षा धर्म अधिक प्रभवशाली रहा था। धर्म ने हिन्दुओं के सम्पूर्ण जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया। उस समय के प्रमुख विचारकों में सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक जीवन के मूलभूत सिद्वान्तों को एक व्यापक प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया तथा इसे धर्म की संज्ञा दी, दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि आदर्शों, परम्पराओं तथा आचारों के सम्पूर्ण जाल को धर्म के नाम से पुकारा गया। इस प्रकार से धर्म ने हिन्दू मानव जाति के सामाजिक व राजनैतिक जीवन को आचार संहिता दी तथा उनकी आर्थिक क्रियाओं का संचालन किया। शिक्षा एक सामाजिक क्रिया है इसलिए प्राचीन काल में शिक्षा भी धर्म से संचालित होती थी। धर्म के एक अंग के रूप मं विद्या शताब्दियों तक पढ़ी जाती रही। धर्म ने ही भारत में साहित्य को जन्म दिया, धर्म ने ही शिक्षा का स्वरूप निर्धारितक किया।

आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व महात्मा गौतम बुद्ध (563.483 BC) बौद्ध धर्म की स्थापना की थी। बौद्ध धर्म में व्यापक हिन्दू धर्म का ही एक विकसित रूप माना जा सकता है। वास्तव में बुद्ध के समय से लगभग एक सौ पूर्व से ही भारतीय समाज में आन्दोलन होने लगे थे तथा इन्हीं आन्दोंलनों ने ही बौद्ध धर्म के लिए एक उपयुक्त वातावरण तैयार किय। अतःक कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म भारतीय जीवन के आंगिक विकास का परिणाम था। बौद्ध धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए बौद्ध मठों व विहारों की स्थापना की गयी थी। प्रारम्भ में इन मठों तथा विहारों का एक मात्र उद्देश्य बौद्ध धर्म की शिक्षा प्रदान करना था। परन्तु कालान्तर में सभी धर्मों के छात्रों को इन मठो व विहारों में शिक्षा दी जाने लगी थी बौद्धकालीन शिक्षा काफी सीमा तक वैदिक शिक्षा के ही समान थी। जिस प्रकार से यज्ञ वैदिक काल में ज्ञान तथा शिक्षा के केन्द्र बिन्दु थे, ठीक उसी प्रकार से बौद्ध संघाराम बुद्ध काल में शिक्षा व विद्या के केन्द्र थे।

बौद्धधर्म में शिक्षा के द्वार सभी वर्ग के लोगों के लिए खुले थे। पहली बार भारतीय शिक्षा जगत् में व्यापक जनतंत्रींय शिक्षा व्यवस्था बौद्ध धर्म की शिक्षा व्यवस्था में देखने को मिलती है। जहाँ एक ओर प्राचीन व्यवस्था में शिक्षा उच्च वर्ग एक ही सीमित थी वहीं, बौद्ध धर्म शिक्षा व्यवस्था में सबको समान अवसर दिया गया एवं जातिवाद को कोई स्थान प्राप्त नहीं था। अतः बौद्ध धर्म की शिक्षा व्यवस्था जनतांत्रिक दृष्टि से प्रासंगिक थी।

पाण्डेय (1981) के अनुसार बौद्धधर्म में प्रतिपादित आष्टांगिक मार्ग के अनुशीलन से मनुष्य ने केवल दुखों से निवृत्ति पा सकता है बल्कि वह नैतिक, सामाजिक एवं अन्य सद्गुणों से युक्त मानव बन सकता है। इनके पालन से समाज में चारों ओर सुखशान्ति एवं समृद्धि लाई जा सकती है। बौद्ध–दर्शन में प्रतिपादित शील की आज के संदर्भ में प्रसंगिकता असंदिग्ध है। शील ही व्यक्ति को परिवार, समाज, देश–विदेश, अर्थात् सभी जगह सम्मान दिलाता है। आज शील गुणों के अभाव में समाज की व्यवस्था बिगड़ती जा रही है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बालक के मानसिक एवं शारीरिक विकास पर अधिक बल दिया जाता है। बौद्धधर्म के प्रतीत्य समुत्पाद में वर्णित 'नामरूप' इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। नामरूप दो शब्दों से मिलकर बना है–नाम+रूप। यहाँ पर नाम एवं रूप का अर्थ क्रमशः मन एवं भौतिक पदार्थ से लिया गया है। भौतिक पदार्थ से आशय व्यक्ति के शरीर से है। बौद्धधर्म में भी ज्ञान प्राप्ति के लिए मानसिक एवं शारीरिक विकास पर बल

दिया जाता था जिससे बालक सम्यक् ज्ञान प्राप्त करके निर्वाण प्राप्त कर सके। अतः बोद्ध धर्म मनोविज्ञान की दृष्टि से भी आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक है।

तिवारी (1991) के अनुसार बौद्धधर्म में कर्म का सिद्धान्त शिक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महात्वपूर्ण है। कहा गया है कि जैसा कर्म वैसा ही फल मिलेगा अर्थात उत्तम कर्म के लिए जो फल मिलेगा वह सुखदायी होगा और बुरे कर्म के लिए जो फल मिलेगा वह दुःखदायी एवं पीड़दायक होगा। बौद्धधर्म का उद्देश्य इन्ही दुःखों से संसार को उबरना है और इन्हीं दुःखों से संसार को उबारना है और इन्हीं दुःखों का नाश करने के लिए बौद्धधर्म में आष्टांगिक मार्ग का अध्ययन करना अनिवार्य बताया गया है। अतः कर्म के सिद्धान्त से बालक में नैतिक गुणों का विकास होता है, जिसके परिणाम स्वरूप वह कर्णी कार्य करता है और अकर्णी को त्याग देता है। अतः ऐसे नैतिक गुणों की आज की परिस्थितियों में विद्यार्थी के अन्दर कमी पायी जाती है जिससे विद्यालयों में अनुशासनहीनता की अनेक घटनाएँ देखने को मिलती है, अतः हम कह सकते है कि कर्म का सिद्धान्त आज के विद्यालयी पर्यावरण के लिए प्रासंगिक है।

बौद्धधर्म में व्यक्ति का अन्तिम अद्देश्य निर्वाण प्राप्त करना है। निर्वाण प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति को अपने कर्मो का संचय होने से रोकना है, और कर्मों का संचय तभी रूक सकता है जब व्यक्ति आष्टांगिक आचरण का अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करे। अतः उसे निर्वाण प्राप्त करने के लिए अपने आप को नियन्त्रित एवं अनुशासित रखना पड़ेगा। अतः निर्वाण का सिद्धान्त आज भी शिक्षाजगत् में बालक को निर्देशित एवं अनुशासित रखने के लिए प्रासंगिक है।

आधुनिक संदर्भ मं एक ही कक्षा में कई अध्यापकों के पढाने की व्यवस्था है उसी प्रकार बौद्ध शिक्षा प्रणाली में श्रमणों के एक समूह को एक से अधिक उपाध्याय विभिन्न विषयों से सम्बन्धित अध्यापन कार्य करते थे जिससे छात्रों की किसी भी समस्या का समाधान किया जा सके।

प्राचीन शिक्षा के उद्देश्य मनुष्य की धार्मिक, वृत्तियों का उत्थान, मनुष्य के चरित्र का उत्थान, व्यक्ति के व्यक्तित्व का उत्थान, जीवन का उत्थान एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का निष्पादन थे। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति निर्वाण की ओर अग्रसर होता था। इस सभी शिक्षा के उद्देश्यों की उपयोगिता वर्तमान में भी है क्योकि इन उद्देश्यों की प्राप्ति के बिना राष्ट्र की प्रगति संभव नही है लेकिन वर्तमान शिक्षा बालक का एकांगी विकास कर रही है। पुस्तकों को रटने पर बल दिया जाता है और परीक्षा प्रणाली इस रटने को प्रोत्साहित कर रही है। इससे ज्ञान, बुद्धि व चिन्तन शक्ति का स्थायी का स्थायी विकास न होकर मस्तिष्क का एकांगी विकास हो रहा है। इस प्रकार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य जो बौद्धधर्म मे था आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना तत्कालीन परिस्थितियों में था। यदि हमें एक वर्ग विहीन, धर्मनिरपेक्ष, समृद्धशाली और कल्याणकारी समाज की रचना करना है तो इसकी प्राप्ति के लिए वर्तमान शिक्षा के ढाँचे में परिवर्तन करना पड़ेगा।

बौद्धधर्म में गुरू एवं शिष्य के एक दूसरे के प्रति जिन कर्त्तव्यों का वर्णन मिलता है, वे आधुनिक संदर्भ मं सराहनीय है। आधुनिक गुरू शिष्य से कम और वेतन के साथ ज्यादा लगाव रखता है। अगर कहीं स्ट्राइक पर हो तो सारे कर्त्तव्य भूल जाता है चाहे शिष्य का कैरियर ही क्यों न दाँव पर लगा हो। बस याद रहता है तो मात्र इतना कि स्ट्राइक चल

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

रही है। शिष्य भी गुरू के प्रति कोई आन्तरिक भाव प्रकट नहीं करता जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षक एवं छात्रों के मध्य दूरियाँ बढ़ती जा रही है। इन दूरियों को कम करने के लिए जरूरी है कि किसी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था को लागू किया जाए। अतः शिक्षक–छात्र सम्बन्ध भी आधुनिक परिस्थितियों में उतने ही प्रासंगिक प्रतीत होते हैं जितने कि प्राचीन परिस्थितियों में थे।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्याख्यान विधि, कक्षा में वाद–विवाद विधि, सम्मेलन (सेमिनार) विधि, प्रश्नोत्तर विधि, भ्रमण आदि विधियों का सामान्यतः उच्च कक्षाओं में प्रयोग किया जाता है। रावल (1985) के अनुसार बौद्ध शिक्षा प्रणाली में भी प्रवचन, व्याख्या, सम्मेलन एवं देशाटन विधियों का अध्यापन क्रिया के लिए प्रयोग किया जाता था। आधुनिक खोज विधि के समान ही बौद्ध शिक्षा में समाधि का प्रयोग किसया जाता था जिसमं बौद्ध भिक्षु शान्त स्थान पर विषय के बारे में चिंतन मनन करता था। अतः बौद्ध धर्म की शिक्षण विधियाँ भी आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक है।

आधुनिक शिक्षा को एकांगी बना दिया गासय है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास नहीं करती है, जैसे यदि कोई छात्र किसी मैनेजमेंट कालेज में बी0टेक0 की पढाई कर रहा है, उसे पूछा जाये कि तुम्हारे मूलाधिकार क्या है तो वह नहीं बता पाता है और यह पूछा जाये कि आपकी संस्ति, आपका अतीत क्या है, तब भी वह नहीं बता पाता है। अतः उसे भौतिक पक्ष का तो ज्ञान हो जाता है, परन्तु उसके सामाजिक सांसतिक एवं राजनीतिक पक्ष अछूते रह जाते है। इसके विपरीत यदि कोई छात्र उदारवादी शिक्षा ग्रहण कर रहा हो, तो उसे भौतिक विषयों के बारे में शून्य ज्ञान होता है। इस समस्या से निपटने के लिए तथा बालक का सर्वांगीण विकास कने के लिए आवश्यकता है कि उपयोगितावादी तथा उदारवी शिक्षा को एकसाथ शिक्षा के पाठ्यक्रम को आधुनिक रूप में परिवर्तित करके आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक बनाया जा सकता है।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की नीति चाहे लोकतंत्रात्मक हो या सामाजिक लेकिन व्यावहार में तो तानाशाही नीति का ही प्रचलन है। कालेज के परिप्रेक्ष्य में प्रधानाध्यापक एवं कक्षा के क्षेत्र में अध्यापक तानाशाह होता है।इसके विपरीत बौद्ध शिक्षा केन्द्रों में किसी भी कार्य के लिए भिक्षुओं की सहमति आवश्यक होती थी। इसीलिए, बौद्ध शिक्षा को जनतंत्रीय शिक्षा केन्द्र के रूप में जाना जाता था। अतः इसी प्रकार की शिक्षा प्रणाली को आधुनिक समय में लागू इसी प्रकार की शिक्षा प्रणाली को आधुनिक समय में लागू करने की आवश्यकता है जिससे जनतंत्रीय वातावरण में रहकर छात्र अपना सर्वांगीण विकास कर सके।

अतः आधुनिक शिक्षा प्रणाली को समृद्धशाली, कल्याणकारी, धर्मनिरपेक्ष एवं वर्गविहीन बनाने के लिए बौद्ध शिक्षा प्रणाली को आज की परिस्थितियों के अनुरूप उसका ढाँचा परिवर्तित कर लागू कर देना चाहिए, क्योंकि बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न अंग जैसे उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध वर्तमान समय में पूर्णतया या सामान्यतया प्रासंगिक है।

निष्कर्षः

बौद्ध धर्म के दार्शनिक विचारों में समाज को सशक्त बनाने के लिए मुख्यतः सत्य, सहिंसा, प्रेम, दया, त्याग, परोपकार, सहानुभूति, संयम, सेवा आदि का मनुष्य के हृदय में

होना परम आवश्यक माना गयसा है। भगवान बुद्ध के समाजिक एवं दार्शनिक विचारों में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का लोक कल्याणकारी आदर्श समाविष्ट है।

बौद्ध धर्म में शिक्षा की पाठ्यचर्या में लौकिक एवं पारलौकिक दोनो प्रकार के विषयों एवं क्रियाओं को स्थान दिया गया है। उनकी यह बात सिद्धान्त रूप मं तो अच्छी है, परन्तु बौद्धधर्म एवं दर्शन की शिक्षा पर सर्वाधिक बल देरक उन्होने अपनी धर्म संकीर्णता का परिचय ही दिया है। आज के युक में शिक्षा के क्षेत्र में किसी दर्शन अथवा धर्म पर सर्वाधिक बल देने की बात किसी को स्वीकार नही हो सकती।

शिक्षा द्वारा मनुष्य को किसी कला–कौशल, उद्योग अथवा व्यवसाय में प्रशिक्षित करने की शुरूआत तो हमारे देश में प्राचीन काल से ही रही है, परन्तु उसे व्यवस्थित रूप बौद्धकाल में आकर प्रदान किया गया। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है, कि भारत में शैक्षिक प्रशासन यह कहा जा सकता है, कि भारत में शैक्षिक प्रशासन, शैक्षिक संगठन विद्यालयी एवं विश्वविद्यालयी शिक्षा और समूह शिक्षण की शुरूआत कर बौद्ध ने वर्तमान शिक्षा की नींव रख दी थी, इसी के साथ उन्होने जनशिसक्षा, स्त्री शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा की नींव भी रखी।

बौद्ध दार्शनिक जन्म के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में भेद नही करते थे, इसीलिए उन्होने सबके लिए प्रारंभिक शिक्षा का विधान कियसा है। स्पष्ट है कि वे जन शिक्षा के पक्षधर है। लेकिन वे मानसिक एवं बौद्धिक दृष्टि से मनुष्य–मनुष्य में भेद करते है और उच्च शिक्षा की व्यवस्था केवल मेधावी एवं योग्य छात्रों के लिए ही करते है। काश आज हम भी उच्च शिक्षा के द्वारा केवल मेधावी एवं योग्य छात्रों के लिए ही खुले रखे तो निश्चित रूप से धन का दुरूपयोग रूकेगा, शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि होगी, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों का पर्यावारण शैक्षिक बनेगा, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में जो अनुशासनहीनता के द्रव्य दिखाई दे रहे है जैसे गुटबंदी, तोड़फोड़, मारपीट, छेड़छाड़ आदि मं निरन्तर कमी होती जायेगी और अनुशासन में निरन्तर वृद्धि होती जायेगी। शिक्षा का गुणात्मक स्तर उठेगा, समाज को योग्यतम् चरित्रवान् एवं निष्ठावान् विशेषज्ञ प्राप्त हो सकेंगे। भारतीय समाज में उच्च शिक्षा प्राप्त छात्र हर गली एवं कूँचे में मिल जाते है। जिनके पास उच्च शिक्षा की डिग्री तो होती है परन्तु रोजगार नहीं। अतः बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है, इस प्रकार बेरोजगारी से निपटने का एक ही रास्ता है कि उच्च शिक्षा में योग्य एवं मेधावी छात्रों को ही प्रवेश दिया जाए जिससे राष्ट्र को योग्य नागरिक, योग्य प्रतिनिधि एवं योग्य नौकरशाही का प्रादुर्भाव हो सकेगा।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचार वर्तमान संदर्भ में बहुत ही प्रासंगिक है। इस धर्म के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का पालन कर समाज में समरसता एवं लोगों के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित किये जा सकते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, संगमलाल (1981), भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुल डिपो, पृ0–69
2. तिवारी, राकेश (1991), ऐजुकेशनल इम्पिलिकेशन्स ऑफ बुद्धिस्टिक फिलासफी, पीएच.डी. ऐजुकेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, पृ0–63–75

रावल. एच.एच. (19850), ए स्टडी ऑफ ऐजूकेशनल आइडियाज एज डेपिक्टिड इन

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

बुद्धिस्टिक फिलासफी, पीएच.डी. ऐजुकेशन. सरदार पटेल यूनिसर्सिटी, गुजरात।